Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ ऋषि पंचमी व्रतीकथा ॥

॥ सप्तऋषिभ्यो नमः ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ उत्तंक ऋषि की पुत्री का प्रसंग ॥

यह ऋषि पंचमी की प्रचलित पौराणिक कथा का संक्षिप्त रूपांतरण है। कथा में पुराने काल की मासिक धर्म संबंधी मान्यताएँ आती हैं; वे आधुनिक स्वास्थ्य तथ्य नहीं हैं।

कथा के अनुसार विदर्भ में उत्तंक नाम के एक विद्वान ब्राह्मण अपनी पत्नी सुशीला और बच्चों के साथ रहते थे। उनकी पुत्री का विवाह हुआ, पर कुछ समय बाद वह विधवा हो गई। दुःखी परिवार उसे साथ लेकर गंगा के तट पर रहने लगा।

एक रात पुत्री अचानक गंभीर कष्ट में पड़ी। कथा में उसके शरीर पर कीड़े दिखाई देने का अलौकिक वर्णन है। सुशीला घबरा गईं और उत्तंक से पूछा कि बेटी को इस पीड़ा से कैसे राहत मिले।

उत्तंक ने ध्यान करके पुराने समय की धार्मिक धारणाओं के आधार पर पूर्वजन्म और ऋषि पंचमी व्रत की उपेक्षा का प्रसंग सुनाया। उन्होंने भाद्रपद शुक्ल पंचमी को सप्तऋषियों तथा अरुंधती के स्मरण और पूजा की विधि बताई।

परिवार ने श्रद्धा से पूजा और प्रार्थना की। कथा में कहा जाता है कि पुत्री को राहत मिली। परिवार ने इस अवसर पर ऋषियों से मिले ज्ञान के प्रति कृतज्ञता जताई और जीवन में संयम तथा करुणा रखने का संकल्प लिया।

Harghartanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ कथा को कैसे समझें ॥

सप्तऋषियों के प्रति सम्मान

कथा का धार्मिक पक्ष ऋषि परंपरा के स्मरण, आत्मचिंतन और क्षमा-प्रार्थना से जुड़ा है। व्रत में सप्तऋषियों और अरुंधती का पूजन करके शिक्षा तथा ज्ञान के प्रति आभार व्यक्त किया जाता है।

पुरानी मान्यता और आज का ज्ञान

कथा में मासिक धर्म से जुड़े पुराने “दोष” का उल्लेख है। मासिक धर्म प्राकृतिक शारीरिक प्रक्रिया है; इससे कोई व्यक्ति अशुद्ध नहीं होता। किसी बीमारी को मासिक धर्म या पूजा न करने का दंड न मानें।

कथा-पाठ और देखभाल

पूजा में कथा पढ़ें या सुनें और अंत में सबके स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करें। त्वचा में कीड़े, संक्रमण, तेज दर्द या अन्य असामान्य लक्षण हों तो तुरंत योग्य चिकित्सक से सहायता लें।

कथारूप अलग परिवारों में बदल सकता है। उपवास या पूजा के लिए किसी व्यक्ति पर दबाव न डालें; श्रद्धा के साथ गरिमा और स्वास्थ्य का सम्मान करें।

॥ सप्तऋषिभ्यो नमः ॥